पम्पास में मेरी माँ का रैंच

लेखन व चित्रः मारिया क्रिस्टीना ब्रुस्का

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

इस मोहक कहानी में मारिया क्रिस्टीना ब्रुस्का, शब्दों और चित्रों के सहारे उस पहले अद्भुत साल का वर्णन करती हैं, जो उन्होंने अपनी माँ द्वारा खरीदे और चलाए जाने वाले रैंच (पशु फार्म) में बिताया था। अपनी पहली पुस्तक *द पम्पास* की ही तरह, जो उनके नाना-नानी के *एस्टान्सिया* (खेत) में बिताए गए समय पर आधारित है, इस किताब में भी वे ऐसे अनुभवों का बयान करती हैं, जिनके लिए हर बच्चे के मन में ललक होती है। जैसे अपने खुद के घोड़े की सवारी, *गाउचो* (काउबॉयस या ग्वाले) के साथ खेलना और काम करना, पशुओं की देखभाल कराना, और तो और एक बछड़े के नाटकीय सिज़ेरियन प्रसव में हिस्सा लेना।

अपनी खास आवाज़ और बारीकियों को समेटते जलरंगों से बने चित्रों से मारिया क्रिस्टीना एक मनोहारी व्यक्तिगत कथा सुनाती हैं, जिसे छोटे और बड़े उनके साथ बार-बार जीना चाहेंगे।

मौसम

पृथ्वी साल भर में सूरज के गिर्द एक चक्कर काटती है, और अपनी धुरी पर एक दिन में घुमती है। क्योंकि इसकी धुरी स्थाई रूप से एक कोण में झुकी होती है, उत्तरी ध्रुव छह महीने तक सूरज की ओर झुका रहता है, और बाकी छह महीने तक दक्षिणी ध्रुव।

जब उत्तरी ध्रुव सूरज की ओर झुका होता है तब उत्तरी गोलार्द्ध गरमाता है और उत्तरी अमरीका गर्मियों का मज़ा लेता है, पर पेरु, आर्जेन्टीना और दक्षिणी गालार्द्ध के अन्य देशों में सर्दियाँ होती हैं।

जब दक्षिणी ध्रुव सूरज की ओर झुकता है, तो गरमाहट दक्षिणी गालार्द्ध में आ जाती है, सो दिसम्बर में जब उत्तरी अमरीका में सर्दियाँ होती हैं, आर्जेन्टीना में गर्मियाँ होती हैं।

माहटे

एक कड़वा, हरा-सा गर्म पेय, जो चाय जैसा होता है। इसे खोखली तुम्बी में डाल धातु से बनी नली से पिया जाता है, जिसे *बाम्बीया* कहते हैं। यह तुम्बी एक से दूसरे व्यक्ति को पकड़ाई जाती है।

तौरतास नेग्रास

तौरतास (केक) नेग्रास (काला) ओवन में पकाए जाते हैं। वे चपटे बिस्कुट से लगते हैं जिनके ऊपर जली हुई भूरी चीनी होती है।

पास्टलेस

पास्टलेस तली हुई पेस्ट्री होती हैं जिसमें शक्करकंदी का जैम भरा होता है।

मालाम्बो एक नृत्य है जिसे सिर्फ पुरुष करते हैं। इसमें तेज़ रफ्तार से ढोल बजता है और नर्तक बारी-बारी अपने पंजों और एड़ियों के बल पैर पटकता है, उन्हें क्रास करता और खोलता है, और कभी हवा में उछलता है।

हिस्पानी नाम

मान्चीता

मिंगो

गिएरमो

सालगेएरो

सान्तोस वेगा

डॉन आन्हेल सान्तोस रूफो

एस्टान्सिया ला कारलोता

आसाडो

मॉस, जिसे अमूमन बाहर जलाई गई आग में धीमे-धीमे भूना जाता है।

लास पाम्पास

दक्षिण अमरीका के घास का मैदानी इलाका।

हॉलस्टाइन

बड़े आकार की काली-सफेद दुधारू गाय। यह प्रजाति पाम्पास से अनुकूलित हो गई है। इसे यहाँ होलान्डो आर्जेन्टीनो कहा जाता है।

पेलूडो

एक प्रकार का बख्तरधारी आर्माडिलो पशु, जिसके शल्कों के बीच से पेलो (बाल) निकले होते हैं। यह कीटों और मृत पशुओं को खाता है।

एबरडीन एन्गस

ये छोटे कद और गठीले बदन की गाय होती है, जिसे उसके माँस के लिए पाला जाता है। यह अमूमन काली होती है। इन गायों में नर और मादा, दोनों के ही सींग नहीं होते।

VENEZUELA
COLOMBIA
GUYANA
SURINAM
FRENCH GUYANA
ECUADOR
PERU
SOUTH AMERICA
BRAZIL
BOLIVIA
PARAGUAY
ATLANTIC OCEAN
ARGENTINA
URUGUAY
PAMPAS

ल लूज़ माला

उस लपट सरीखी आभा को ला लूज़ माला कहते हैं, जो कभी-कभी रात को ज़मीन की सतह के ऊपर खास तौर से उन जगहों पर दिखती है, जहाँ गायों, घोड़ों व अन्य पशुओं के कंकाल पड़े होते हैं। ऐसा पशुओं की हड्डियों और मिट्टी के बीच रासायनिक क्रिया के कारण होता है।

गाउचो वस्त्र

ग्वालों के वस्त्र

रास्ट्रा

गाउचो पेटी, जो चमड़े की चौड़ी पट्टी से बनती है, और उसे चान्दी के सिक्कों से सजाया जाता है। ये सिक्के अलग-अलग देशों के हो सकते हैं। गाउचो अपनी बकल पर अपने नाम के अक्षर खुदवाते हैं।

बाम्बाचा

गाउचों की ढीली पतलून।

आलपरगातास

गाउचो के कपड़े से बने जूते जिनके तले जूट/पटसन से बने हों।

मेरी माँ और मेरी भांजियों यूजीनिया और लौरा के लिए

- एम.सी.बी.

पम्पास में मेरी माँ का रैंच

लेखन व चित्रः मारिया क्रिस्टीना ब्रुस्का

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

राइनोसो, मिंगो, एम. क्रिस्टीना, गिएरमो, ममा, पापा
सप्रेम पैमपेरो
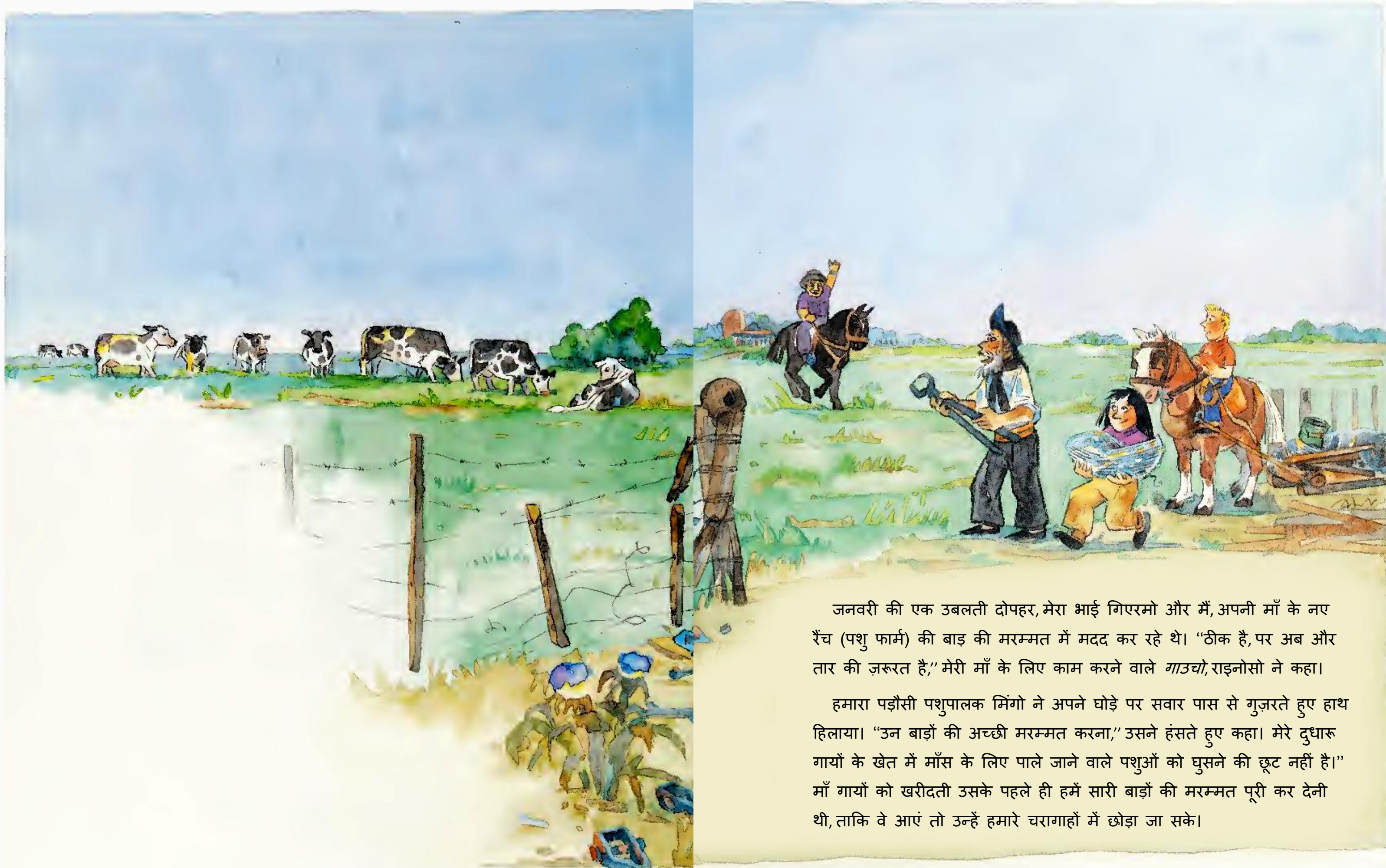
जनवरी की एक उबलती दोपहर, मेरा भाई गिएरमो और मैं, अपनी माँ के नए रैंच (पशु फार्म) की बाड़ की मरम्मत में मदद कर रहे थे। "ठीक है, पर अब और तार की ज़रूरत है," मेरी माँ के लिए काम करने वाले *गाउचो*, राइनोसो ने कहा।

हमारा पड़ौसी पशुपालक मिंगो ने अपने घोड़े पर सवार पास से गुज़रते हुए हाथ हिलाया। "उन बाड़ों की अच्छी मरम्मत करना," उसने हंसते हुए कहा। मेरे दुधारू गायों के खेत में माँस के लिए पाले जाने वाले पशुओं को घुसने की छूट नहीं है।"
माँ गायों को खरीदती उसके पहले ही हमें सारी बाड़ों की मरम्मत पूरी कर देनी थी, ताकि वे आएं तो उन्हें हमारे चरागाहों में छोड़ा जा सके।

ममा ने अपना रैंच दो सप्ताह पहले ही ख़रीदा था। मुझे वह दिन याद है जब हम सब बुएनोस आरिस से, जिस शहर में हम रहते थे, पहली बार इसे देखने आए थे।

ममा, पापा, गिएरमो और मैं, गाड़ी से पाँच घंटों का सफ़र कर इस छोट रैंच तक पहुँचे थे। सफ़र के आख़िरी पचास किलोमीटर हमने उबड़-खाबड़, कच्चे रास्तों से तय किए थे। ममा का खेत *ला कारलोस* से, जो नाना-नानी के एस्टान्सिया (खेत) से बहुत छोटा था। पर गिएरमो और मेरे लिए यह दुनिया की सबसे अद्‌भुत जगह थी।

रैंच पर एक छोटा-सा घर था, एक *कोराल* (पशुशाला) थी, दो पवन चक्कियाँ थीं, एक खस्ताहाल खलिहान था और था एक बिजली का जनरेटर, जो बिरले ही काम करता था, और काम करता तो बेहद शोर मचाता था।

मेरे पिता को काम पर शहर वापस लौटना पड़ा। पर वे हर सप्ताहान्त पर आते रहे। पर ममा, गिएरमो और मैं, पूरी गर्मियाँ वहीं रहने वाले थे।

मिंगो ने हमें एक दुधारू गाय उधार दी थी, और ममा हर सुबह उसका दूध दुहा करती थी। शाम को गिएरमो और मैं उसे *कोराल* (पशुशाला) ले जात थे, उसके बछड़े से दूर, ताकि सुबह दूध मिल सके।

हमारे जिम्मे दूसरे काम भी थे। हम सूअरों को खिलाते थे, और सुबह पवन चक्कियों को खोलते, ताकि उसके पंखे घूमें और हमारे पशुओं के लिए पानी खींचा जा सके। शाम को हम उसे फिर से बन्द कर देते थे। उसे बन्द करते समय हवा से जूझना मुश्किल काम था।

एक दिन, सालगिएरो, जो मेरे नाना-नानी का *गाउचो* (ग्वाला) था, घोड़े पर सवार हमारे रैंच आया। वह मेरे घोड़े पाम्पेरो को साथ लाया था। मैंने पाम्पेरो को सिखा दिया था, सो जब भी मैं मक्के के दानों से भरी बाल्टी खड़खड़ाती वह, छोटे, और छोटे, चक्करों में घूमता दौड़ा चला आता और अपना सिर मेरे कंधे पर टिका, अपनी पसन्दीदा मक्की के दानों का मज़ा लेता था।

गिएरमो, मिंगो के लाल टट्टू की सवारी करता था। उसकी इच्छा थी कि उसे भी एक तगड़ा क्रिओल घोड़ा मिले, जैसा उसके हीरो राइनोसो के पास था। गिएरमो उस *गाउचो* की पूंछ बना फिरता था, उसी की तरह चलने, बोलने और उसकी नकल करने की कोशिश करता था। जब राइनोसो घोड़ों को साधने के काम में लगा होता, गिएरमो उससे हमेशा उसके अतीत के बारे में सवाल पूछा करता था।
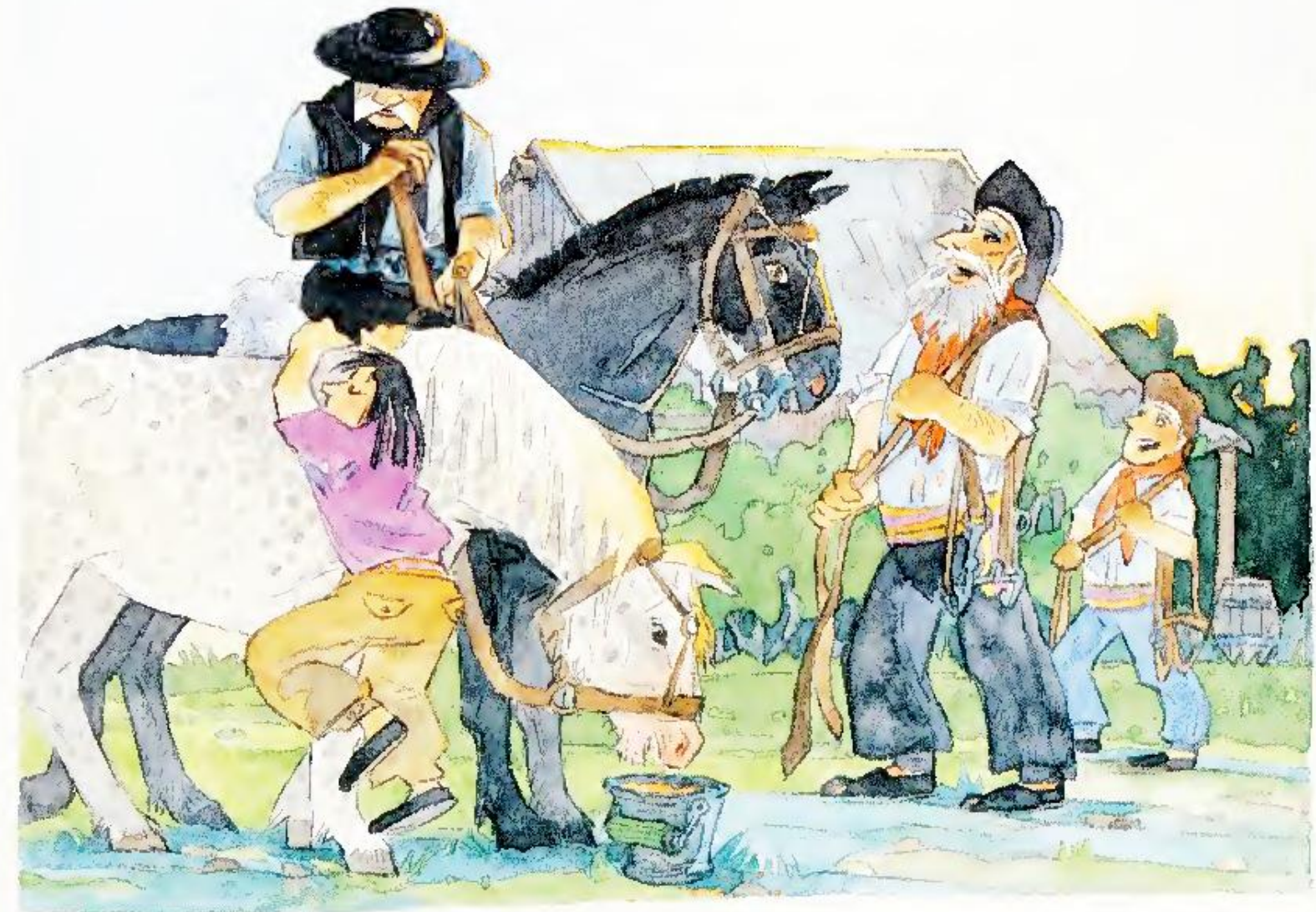
आख़िरकार हमने बाड़ की मरम्मत का काम पूरा किया। अब मेरी माँ गायें ख़रीद सकती थी। सो फरवरी की एक सुबह मेरे माता-पिता हमें पशुओं की नीलामी में ले गए। हम वहाँ पहुँचते उसके पहले ही हमें सैकड़ों गायों की रंभाने की, खुरों को पटकने की और *गाउचो* लोगों की चीखने की आवाजें सुनाई देने लगीं। हम उन्हें दूर से सूंघ भी पा रहे थे। गर्मी के ताप में उनके गोबर की तीखी गंध हमारी नाकों पर हमला कर रही थी।

नीलाम करने वाला डॉन आन्हेल सान्तोस रूफो अपने अजीब-से वाहन में इधर-उधर आ-जा रहा था। उस वाहन पर एक ऊँचा मंच बना हुआ था। वह हरेक *कोरल* (तबेले) के सामने रुकता, ताकि उसके पशुओं की नीलामी कर सके।
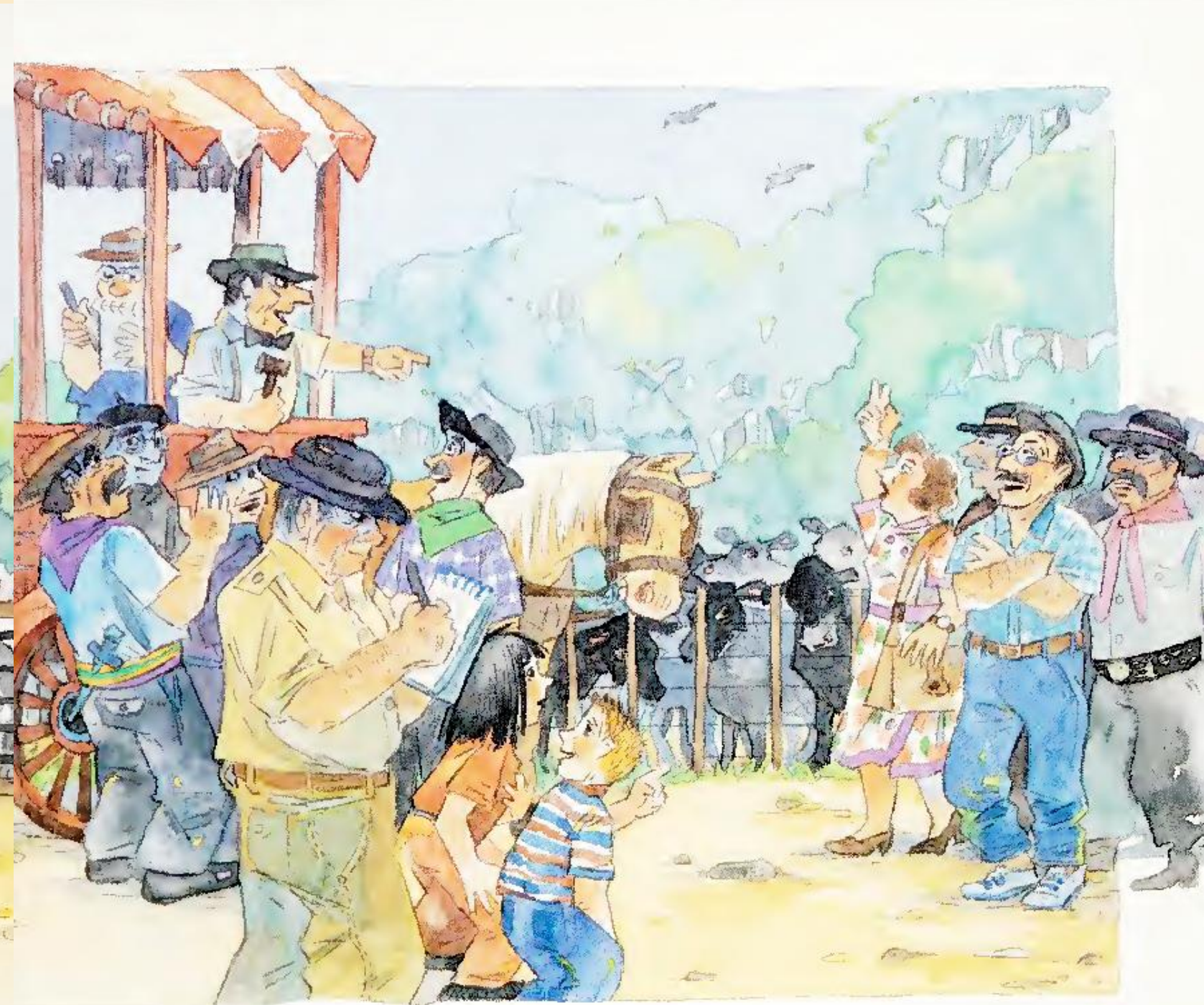
"मुझे ये वाली गायें चाहिए," ममा ने खूबसूरत काली एबरडीन एंगस गायों के एक झुंड की ओर इशारा करते हुए कहा।

हम उस कोरल के पास खड़े हो डॉन आन्हेल के आने का इन्तज़ार करने लगे। "*एस्टान्सिया लोस पेलूडोस* की इन उम्दा बछियाओं को देखो," डॉन आन्हेल ने नीलामी शुरू करते कहा। ममा तैयार थी। "ये दो साल की हैं, और सभी गर्भवती भी," नीलामी करने वाला बोलता गया। "क्या मैं तीस पेसोस फी-नग सुन रहा हूँ?" मेरी माँ ने एक उंगली उठा कर बीस पेसोस की बोली लगाई। डॉन एन्जल ने उन्हें देख सिर हिलाया। "इक्कीस," किसी दूसरे ने कहा। "चौबीस!" "छब्बीस!" "जा रहा है एक, जा रहा है दो, बेचा गया। "मेरी माँ ने उन गायों को अच्छी कीमत पर ख़रीद लिया था।

उस दोपहर गिएरमो और मैंने जैसे ही बाड़ के दरवाज़े खोले, अपने खुरों की तूफानी गरज के साथ ममा की गायें हमारे चरागाह में घुसाई गईं। अब देखना यह था कि हमारी बाड़ें उनके सामने टिकेंगी भी या नहीं।

अगले शनिवार, सुबह जल्दी ही हमने गायों को घेर कर इकट्ठा किया ताकि उन पर निशानदेही का ठप्पा लगाया जा सके। निशान का डिज़ाइन हमने खुद बनाया था। ठीक असली *गाउचो* की तरह अपने घोड़े पर सवार हो, चीखते और पशुओं को आगे की ओर धकेलते हुए मैं उन्हें लकड़ी के दड़बे तक लाई। मेरी माँ ने लोहे से बने ठप्पे को आग पर तपाया, और राइनोसो ने गायों को दागा। गिएरमो ने पापा को वैक्सीन की सूई पकड़ाई और पापा ने हर गाय को सूई लगाई।

जब तक हमने काम पूरा किया सूरज ढ़लने लगा था। हमने बड़े से *असाडो* (भुने माँस का व्यंजन) और पशुओं को दाग देने के दिन के परंपरागत पास्टेलस् खाए।

गर्मियाँ बड़ी तेज़ी से गुज़र गईं और पता लगने से पहले ही मार्च का महीना आ धमका। गिएरमो और मेरे स्कूल लौटने का वक्त हो चुका था। मेरे भाई ने अपने कीटों का संग्रह, ओवनबर्ड (छोटी भूरी चिड़िया) का मिट्टी से बना घोंसला और गाय की एक खोपड़ी साथ ली। मैं पाम्पेरो पर बैठ उसे अपने सबसे दूर वाले चरागाह तक दौड़ाने ले गई। तब उसे गले लगाकर उससे बिदा ली। हम सप्ताहान्त पर लौटने वाले थे, पर उसमें वह मज़ा ही नहीं था। राइनोसो रैंच पर रह कर पशुओं की देखभाल करने वाला था। और कभी माँ भी आकर रहने वाली थी, पर हम बाकी लोग शहर वापस जा रहे थे।

पूरे तीन सप्ताह बाद गिएरमो और मैं रैंच पर लौटे। मौसम अब ठंडा हो चला था। जिन गायों के बछड़े जुलाई या अगस्त में होने वाले थे, वे मुटाई लग रहीं थीं।

''एक बार बाड़ों को जाँच लेते हैं,'' मेरे भाई ने सुझाया। वह राइनोसो के औज़ार लेने दौड़ा और हम दोनों ने धीमी चाल से रैंच की पूरी बाड़ों का मुआयना किया। अचानक मैंने ग़ौर किया कि हमारी एक गाय मिंगो की ओर के बाड़ के तार में उलझी हुई है। उसका कद ठिगना था, और वह दूसरी गायों की तरह मोटी भी नहीं दिख रही थी। उसके कपाल पर एक सफेद तारा था।
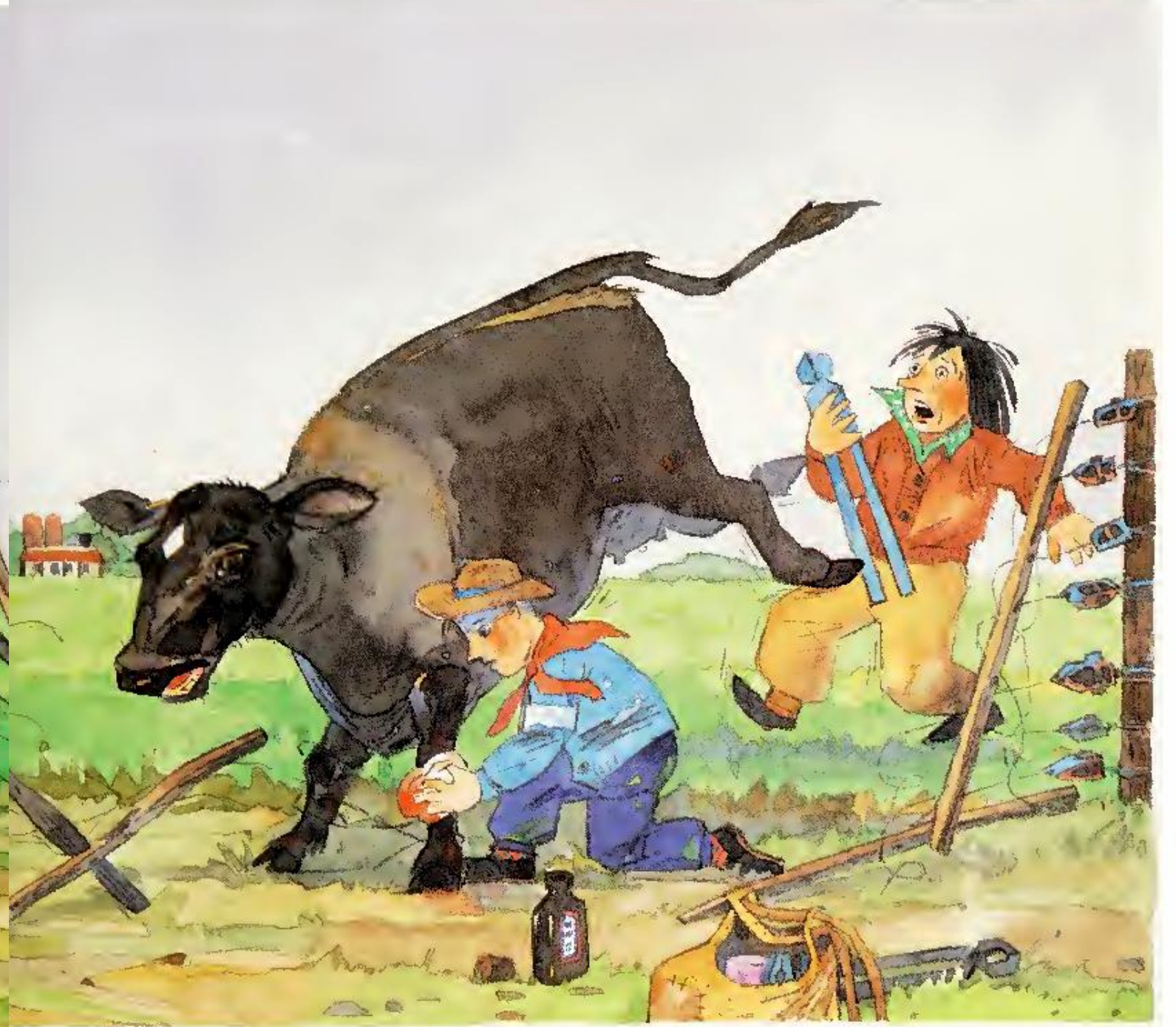
उसका पैर कंटीले तार से कट चुका था, उसकी आँखों में विद्रोह झलक रहा था। उसके लतियाते खुरों से बचते हुए गिएरमो ने उसके पैर पर मरहम लगाया, जैसे राइनोसो ने उसे सिखाया था। तब हमने कंटीले तार काटे। वह जैसे ही तारों की जकड़ से छूटी अपने चरागाह की ओर भागी।

मैंने ममा को उस ठिगनी गाय के बारे में बताया, वे बोलीं, ''ओह वह शैतान लड़की! वह इस महीने कम से कम पाँच बार मिंगो की तरफ जा चुकी है!''

अप्रेल तक मौसम काफ़ी सर्द हो चुका था। मेरी माँ ने एक सल्की (दोपहिया बग्घी) और रोज़ा नाम की एक सफेद घोड़ी खरीदी और मुझे उसे जोतना और हाँकना सिखाया। हम रैंच में उसे चलाने का अभ्यास करते और साथ ही सभी गायों और उनकी मोटी तोंदों को भी देखते चलते। बस सफेद तारे वाली हमारी दोस्त अकेली गाय थी, जो गर्भवती नहीं लग रही थी।

मई में मेरी सालगिरह के लिए ममा-पापा ने मुझे गिएरमो के साथ सल्की को कस्बे तक ने जाने दिया। जब हम कसाई और नानबाई (बेकर) की दुकानों पर जा चुके, हम बिसातखाने (जनरल स्टोर) में गए। बिसातखाने का नाम *ला पुन्यालाडा* (छुरा भोंकना) बहुत पहले इस कारण पड़ा था क्योंकि वहाँ एक *गाउचो* को छुरा भोंक कर मार डाला गया था। बिसातखाने की दीवार पर इस घटना का एक बड़ा-सा चित्र भी लटका हुआ था। बिसातखाने का मालिक अपने पूराने विक्टरोला (ग्रामाफोन) पर संगीत बजा रहा था, सो गिएरमो और मैं मलाम्बो नाचने लगे। पास खड़े *गाउचो* लोगों को बड़ा मज़ा आया।

जुलाई में हमारी सर्दियों की छुट्टियाँ हुईं, और हम पूरे दो सप्ताह के लिए रैंच पर गए। उस सर्दी काफ़ी बरसात हुई, हमारी गाड़ी कादे में फंस गई। किस्मत से एक दोस्ताना *गाउचो* ने उसे अपने घोड़े की मदद से उसे बाहर निकाला।

पहले सप्ताह लगातार बारिश होती रही। सो दिन में एक बार हममें से कोई जाकर गायों को संभाल आया करता था। पर जब ममा की बारी आई, उन्हें एक बेहतर ख़याल सूझा, उन्होंने अपनी दूरबीन निकाली और उससे उन्हें देखा।

गिएरमो और मैंने अपना काफ़ी समय खलिहान में बिताया, ताकि अपनी लगामों और काठियों को संभाल सकें और अपने घोड़ों की रास बुन लें। राइनोसो ने माहते पीते और *तौरतास नेग्रास* खाते हमें अद्‌भुत कहानियाँ सुनाईं। मैंने राइनोस को वह असली *रास्ट्रा* (गाउचे कमर-पट्टी) दिखाई जो नाना-नानी ने मुझे दी थी। उसने उसकी बहुत तारीफ़ की।

एक दोपहर ममा अपनी दूरबीन हिलाते अचानक खलिहान में घुसीं। ''लगता है हमारी पहली बछड़ी पैदा हो गई है,'' ममा ने ऐलान किया।

बसन्त हमारे यहाँ 21 सितम्बर से शुरू हो जाता है, सो अक्तूबर तक मौसम अच्छा गरम हो गया। क्योंकि इस साल सर्दियों में काफ़ी बरसात हुई थी, हमारे दूर वाले चरागाह में बाढ़ आ चुकी थी। कई तरह के जल पक्षियों, बत्तख, टिकरी, सफ़ेद बगुला, गंगा चिल्ली, यहाँ तक कि राजहंसों ने भी वहाँ अपने घोंसले बना लिए थे।

"अपन एक अंडों का संग्रह बनाते हैं," गिएरमो ने सुझाव दिया। "अगर हम हरेक घोंसले से सिर्फ एक-एक अंडा उठा लें तो चिड़ियों को पता ही नहीं चलेगा।" पर उन्हें बाकायदा पता चला! जैसे ही मैंने पहले अंडे की ओर हाथ बढ़ाया, छपाक! चिड़ियों की बीट हमारे सिर पर बरसी! हमारे सिर के ऊपर सैंकड़ों गंगा चिल्ली चक्कर लगा रही थीं, और मानो एक अदृश्य संकेत पा उन्होंने अपनी सफ़ेद गिलगिली बीट से हम पर बमबारी की। उनकी चाल कारगर रही! हमारा संग्रह कभी पूरा नहीं हुआ।

नवम्बर में घास और हरी हो गई और जहाँ हमारी नज़र जाती वहीं हमें बछड़े अपनी माँ का दूध पीते नज़र आते। केवल एक ही गाय बिन बछड़े की थी, हमारी तिलकधारी दोस्त। पर अब वह मोटी ज़रूर नज़र आने लगी थी। शायद उसका भी बछड़ा हो।
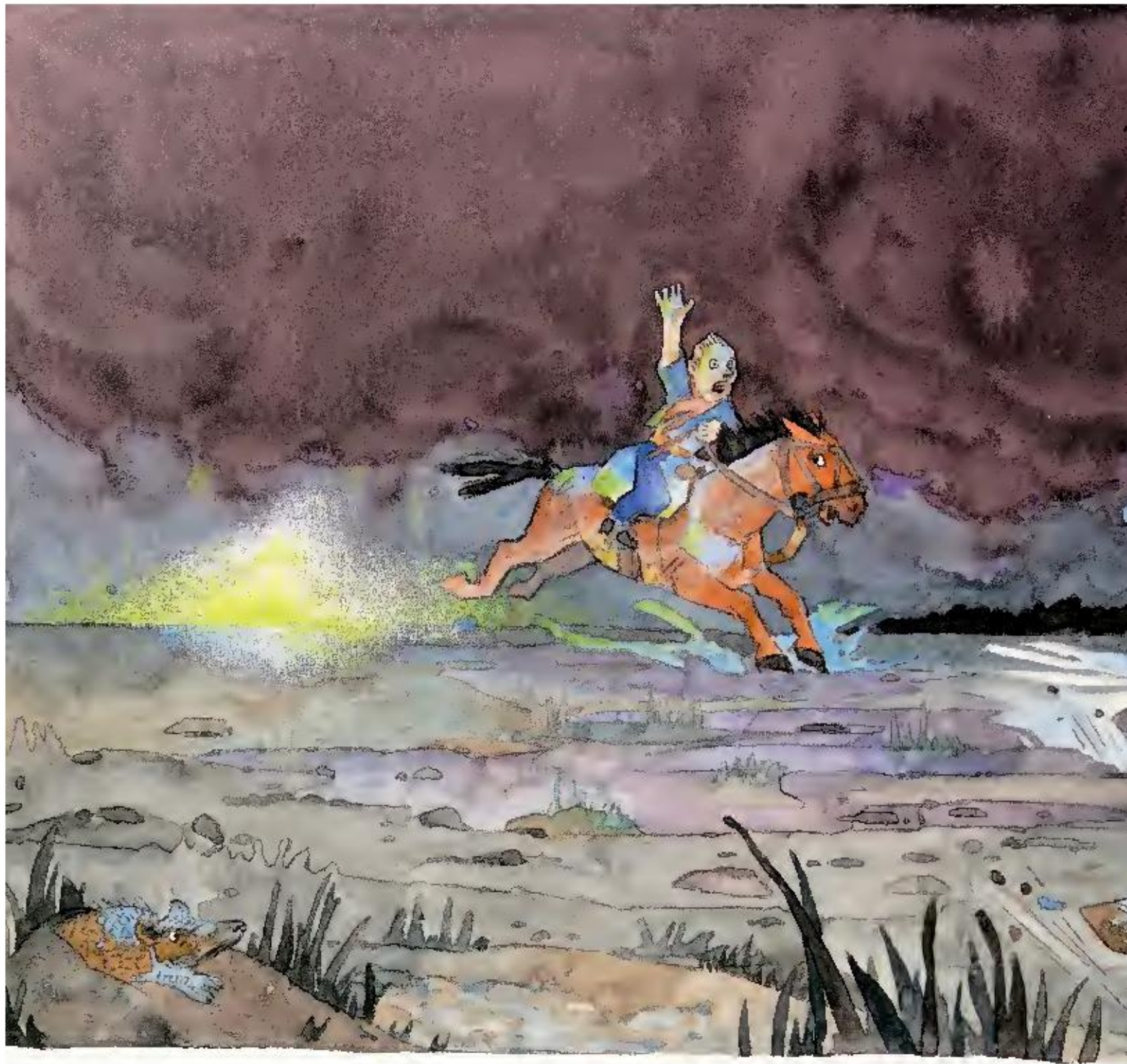
नवम्बर के आख़िरी दिन स्कूल खत्म हुआ। रैंच में हमारी पहली रात हम राइनोसो के साथ पेलूडो का शिकार करने गए। जब भी हमें कोई छोटा सा आर्मडिलो दिखता हम घोड़े से नीचे कूद, वह अपने बिल में भागे उसके पहले ही उसे पकड़ने की कोशिश करते। हम इतनी दूर तक चले आए कि हमें अपना घर और पवन चक्की तक दिखाई नहीं दे रहा था।

अचानक राइनोसो घबरा कर चीखा, "*ला लुज़ माला!* (शैतानी रोशनी)। हमारे सामने ज़मीन की सतह से कुछ ऊपर एक डरावनी आभा थी। राइनोसो ने डर के मारे अपना घोड़ा वापस मोड़ लिया। मेरा कलेजा उछला। मैंने पाम्पेरो को तेज़ भागने को उकसाया और घर पहुँचने तक मुड़ कर देखने तक की हिम्मत नहीं की। मैं यह सोच थर्राती रही कि मेरा सामना सान्तोस वेगा से न हो जाए। सान्तोस वह *गाउचो* था जिसे गिटार बजाने की स्पर्धा में हारने के बाद अपनी आत्मा शैतान को सौंपनी पड़ी थी!
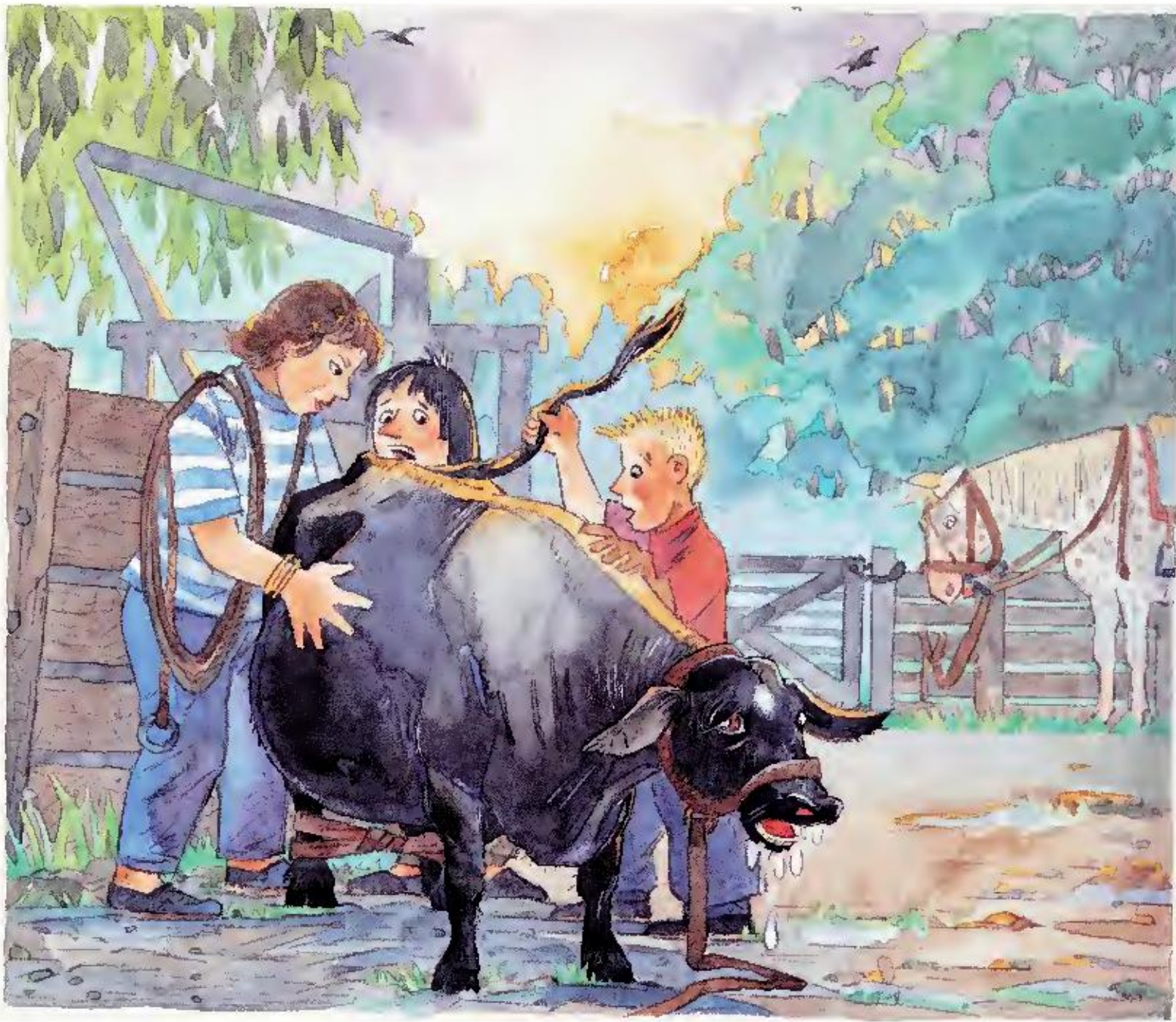
क्रिसमस के कुछ दिन पहले एक शाम मैं घोड़े पर सवार घर लौट रही थी। मैंने ग़ौर किया कि हमारी छोटी तिलकधारी गाय परेशान लग रही है। मैं उसे *कोराल* में लाई और ममा और गिएरमो को बुलाया। राइनोसो अपने परिवार से मिलने गया हुआ था और पापा शहर में थे।

"लगता है उसका बछड़ा पैदा होने वाला है," ममा बोलीं। "पर कुछ तो गड़बड़ है, ये देखो बछड़े के पैर नज़र आ रहे हैं, यानि वह सही जगह तो है," ममा ने समझाया। "हो सकता है वह बहुत बड़ा हो। मैं उसे खींच कर निकालना नहीं चाहती, कहीं गाय को तकलीफ़ न हो जाए। बेहतर होगा हम पशु चिकित्सक को बुलवा लें।"

रैंच पर न तो फोन था, ना ही कार। सो मैं घोड़े पर सवार हो चरागाहों के पार मिंगो के घर दौड़ी। उससे यह कहने कि वह अपनी गाड़ी से कस्बे जाकर पशु चिकित्सक को ले आए। तब मैं उसी रफ्तार से घर लौटी।

कुछ ही देर बाद मिंगो का ट्रक चिंघाड़ता आया, उसकी सामने वाली बत्तियाँ *कोराल* को रोशन कर रही थीं। डॉ. लोपेज़, पशुचिकित्सक नीचे कूदे।

"इसे बचाने का एक ही तरीका है," वे गाय को जाँचने के बाद बोले। "और मुझे यह भी पता नहीं है कि मैं इसके बछड़े को बचा भी सकूंगा या नहीं। इसे एक सिज़ेरियन ऑपरेशन की ज़रूरत है। मैं इसके पेट को चीर कर बछड़े को निकालूंगा। पर मुझे मदद चाहिए होगी।"

उन्होंने गाय को एक सूई लगाई ताकि उसे दर्द न महसूस हो। वह फ़ौरन ही उनींदी हो गई। मिंगो, ममा और चिकित्सक ने उसे लिटाने में मदद की।

"अब तुम मदद कर सकती हो," वे मुझे देख बोले। "तुम अपना घुटना उसकी गरदन पर रखे, ताकि वह हिले नहीं। और गिएरमो, खूब खून निकलेगा, सो यह कपड़ा लो और गाय को साफ़ करते रहना।"

तब चिकित्सक ने उसका पेट चीरा। हमने अचरज से देखा कि उन्होंने अपना हाथ घुसा एक बड़े सारे बछड़े को उसकी टांगों से पकड़ खींच निकाला। "क्या वह मर चुका है?" गिएरमो ने पूछा।

"पता नहीं," चिकित्सक ने कहा। वे गाय का पेट सीने में जुट गए थे। "बछड़े को पोंछ कर सुखाओ मिंगो, और उसके गले की मालिश करो। तब देखते हैं।"

अचानक बछड़े का मुँह हिला और उसकी आँखें खुलीं। वह ज़िन्दा था!

"वाह!" मेरा भाई फुसफुसाया, ममा ने मुझे गले लगाया, मिंगो की आँखों में आँसू थे।

गाय अब तक खड़ी हो चुकी थी, उसने अपने बछड़े को चाटा। चिकित्सक ने उसे एन्टीबायोटिक की एक बड़ी ख़ुराक दी, ताकि संक्रमण न हो और कहा कि वह जल्दी ही ठीक हो जाएगी। अपने बछड़े को दूध तो वह फ़ौरन ही पिलाने लगी थी।

बछड़ा सचमें काफ़ी बड़ा था और उसके शरीर पर काले और सफ़ेद धब्बे थे। "मैं जानता हूँ तेरा बाप कौन है," मिंगो बोला। "मेरा हॉलस्टाइन साँड!" हॉलस्टाइन प्रजाति, एबरडीन एन्गस से काफ़ी बड़ी होती है, और यह बछड़ा अपने पिता जैसा बड़ा था - ज़ाहिर है अपनी एन्गस माँ के लिए बहुत ही बड़ा।

अगले दिन क्रिसमस की पूर्व संध्या) थी। हालांकि गर्मी बहुत थी हमने अपना लकड़ी वाला तन्दूर जलाया और एक सुअर भूना। जब रात को पापा शहर से आए हम सब साथ खाने बैठे। ठीक मध्यरात्रि को हमने क्रिसमस का स्वागत किया और अपने तोहफ़े खोले।

गिएरमो और मैं नए बछड़े को पापा को दिखाने बगीचे में लाए। हमने उसका नाम मांचीता रखा था, जिसका मतलब होता है "धब्बा"। हमने उसे कुछ और दूध पिलाया, क्योंकि उसकी माँ का दूध काफ़ी नहीं था।
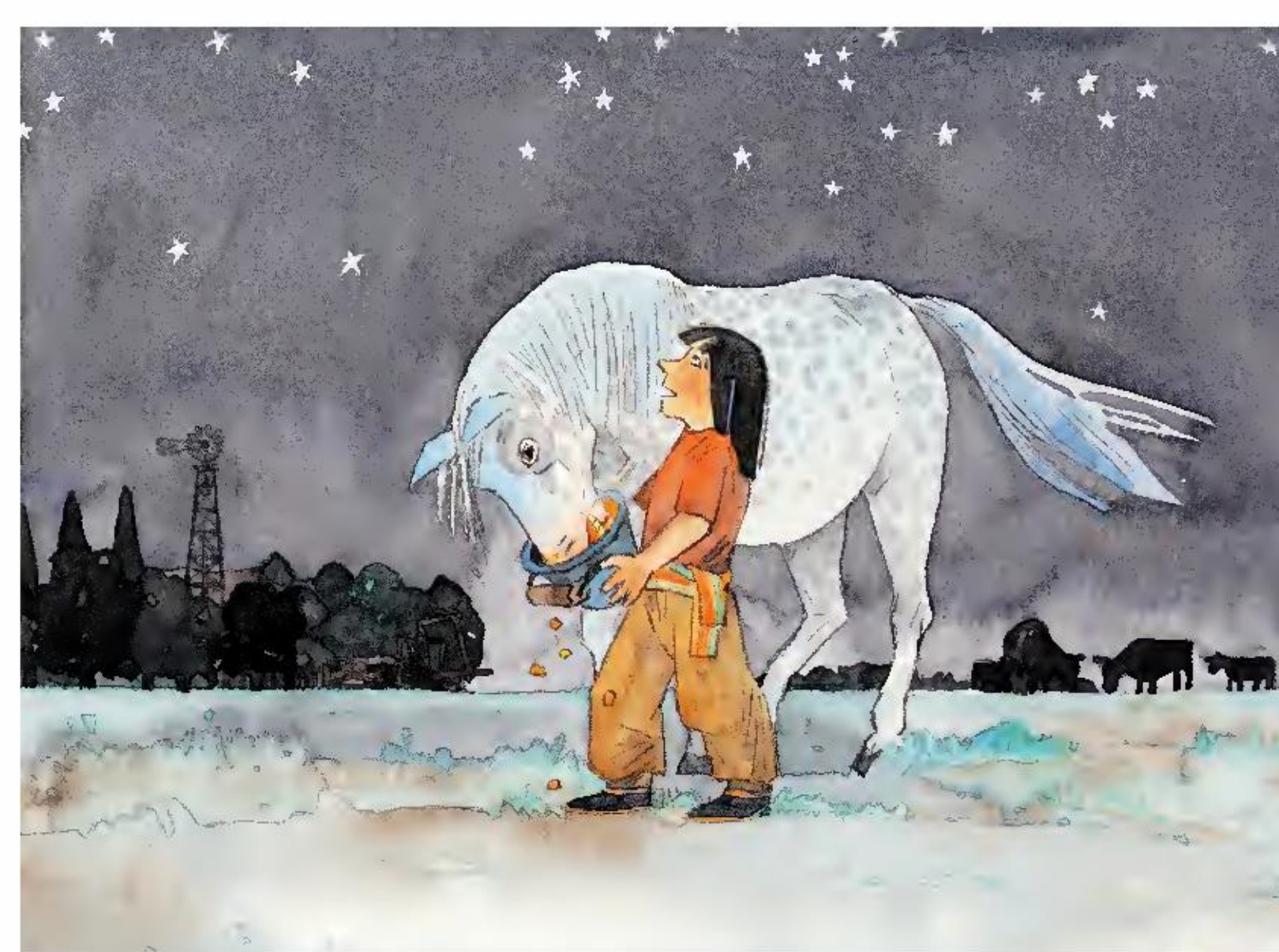
बहुत देर हो चुकी थी, पर सोने से पहले मैंने कुछ मक्की के दाने लिए और चरागाह में अपने घोड़े से मिलने गई। गरम मद्धम हवा में गज़ब की खुशबू थी। और चूंकि जेनरेटर फिर से ख़राब हो गया था अंधेरा भी था। और थी चुप्पी और शान्ति। मैं चरागाहों में मवेशियों को रंभाते और दूर कहीं गुज़रती ट्रेन को सुन सकी।

मैंने अपनी मक्की की बल्टी खड़खड़ाई और पाम्पेरो दूर से दौड़ता चला आया। उसने अपना सिर मेरी गरदन पर रखा और झुक कर मक्की चबाने लगा। मैंने ऊपर तारों को देखा और उन सारी विनोद भरी और डरावनी बातों को याद किया जो मेरी माँ के विलक्षण रैंच में उस पहले साल घटीं थीं।

मौसम

पृथ्वी साल भर में सूरज के गिर्द एक चक्कर काटती है, और अपनी धुरी पर एक दिन में घुमती है। क्योंकि इसकी धुरी स्थाई रूप से एक कोण में झुकी होती है, उत्तरी ध्रुव छह महीने तक सूरज की ओर झुका रहता है, और बाकी छह महीने तक दक्षिणी ध्रुव।

जब उत्तरी ध्रुव सूरज की ओर झुका होता है तब उत्तरी गोलार्द्ध गरमाता है और उत्तरी अमरीका गर्मियों का मज़ा लेता है, पर पेरु, आर्जेन्टीना और दक्षिणी गालार्द्ध के अन्य देशों में सर्दियाँ होती हैं।

जब दक्षिणी ध्रुव सूरज की ओर झुकता है, तो गरमाहट दक्षिणी गालार्द्ध में आ जाती है, सो दिसम्बर में जब उत्तरी अमरीका में सर्दियाँ होती हैं, आर्जेन्टीना में गर्मियाँ होती हैं।

माहटे

एक कड़वा, हरा-सा गर्म पेय, जो चाय जैसा होता है। इसे खोखली तुम्बी में डाल धातु से बनी नली से पिया जाता है, जिसे *बाम्बीया* कहते हैं। यह तुम्बी एक से दूसरे व्यक्ति को पकड़ाई जाती है।

तौरतास नेग्रास

तौरतास (केक) नेग्रास (काला) ओवन में पकाए जाते हैं। वे चपटे बिस्कुट से लगते हैं जिनके ऊपर जली हुई भूरी चीनी होती है।

पास्टलेस

पास्टलेस तली हुई पेस्ट्री होती हैं जिसमें शक्करकंदी का जैम भरा होता है।

मालाम्बो एक नृत्य है जिसे सिर्फ पुरुष करते हैं। इसमें तेज़ रफ्तार से ढ़ोल बजता है और नर्तक बारी-बारी अपने पंजों और एड़ियों के बल पैर पटकता है, उन्हें क्रास करता और खोलता है, और कभी हवा में उछलता है।

हिस्पानी नाम

मान्चीता

मिंगो

गिएरमो

सालगेएरो

सान्तोस वेगा

डॉन आन्हेल सान्तोस रूफो

एस्टान्सिया ला कारलोता

आसाडो

माँस, जिसे अमूमन बाहर जलाई गई आग में धीमे-धीमे भूना जाता है।

लास पाम्पास

दक्षिण अमरीका के घास का मैदानी इलाका।

हॉलस्टाइन

बड़े आकार की काली-सफेद दुधारू गाय। यह प्रजाति पाम्पास से अनुकूलित हो गई है। इसे यहाँ होलान्डो आर्जेन्टीनो कहा जाता है।

एबरडीन एन्गस

ये छोटे कद और गठीले बदन की गाय होती है, जिसे उसके माँस के लिए पाला जाता है। यह अमूमन काली होती है। इन गायों में नर और मादा, दोनों के ही सींग नहीं होते।

पेलूडो

एक प्रकार का बख्तरधारी आर्माडिलो पशु, जिसके शल्कों के बीच से पेलो (बाल) निकले होते हैं। यह कीटों और मृत पशुओं को खाता है।

ल लूज़ माला

उस लपट सरीखी आभा को ला लूज़ माला कहते हैं, जो कभी-कभी रात को ज़मीन की सतह के ऊपर खास तौर से उन जगहों पर दिखती है, जहाँ गायों, घोड़ों व अन्य पशुओं के कंकाल पड़े होते हैं। ऐसा पशुओं की हड्डियों और मिट्टी के बीच रासायनिक क्रिया के कारण होता है।

गाउचो वस्त्र

ग्वालों के वस्त्र

रास्ट्रा

गाउचो पेटी, जो चमड़े की चौड़ी पट्टी से बनती है, और उसे चान्दी के सिक्कों से सजाया जाता है। ये सिक्के अलग-अलग देशों के हो सकते हैं। गाउचो अपनी बकल पर अपने नाम के अक्षर खुदवाते हैं।

बाम्बाचा

गाउचों की ढ़ीली पतलून।

आलपरगातास

गाउचो के कपड़े से बने जूते जिनके तले जूट/पटसन से बने हों।

मारिया क्रिस्टीना ब्रुस्का अर्जेन्टीना में बड़ी हुईं। वे बचपन में अपनी गर्मियों की छूट्टियाँ पहले अपने नाना-नानी के एस्टान्सिया (रैंच, पशु फार्म) में और तब अपने माँ के छोटे रैंच में बिताती थी। आज वे पोर्ट ईवन, न्यू यार्क में रहती हैं और बच्चों के लिए किताबें लिखती और उन्हें चित्रों से सजाती हैं। ये किताबें पम्पास (दक्षिण अमरीका के मैदान) के लिए उनके प्रेम से प्रेरित हैं। उनके भाई पशु चिकित्सक हैं और अपनी माँ के रैंच को संभालते हैं।